International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पुराणों में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा

नितेश कुमार और किशनाराम बिश्नोई
गुरू जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान, गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय, हिसार।
E-mail: niteshkukna.27@gmail.com

भुमिका

पर्यावरण एक ऐसा तंत्र है जिससे हम भली भांति परिचित हैं यह हमारे जीवन निर्वाह के लिए प्राथमिक तत्रं है। पर्यावरण दो भाब्दों के संयोग से बना है परि + आवरण। परि से तात्पर्य है– चारों ओर ईर्द–गिर्द परिधि व आवरण से तात्पर्य है– घेरना या आच्छादन। हमारे ईर्द–गिर्द मौजूद समस्त जैविक–अजैविक सूक्ष्म–स्थूल प्राकृतिक घटकों का अस्तित्व और इनके योग से उत्पन्न हुई परिस्थितियों एवं उनका समन्वित प्राकृतिक वातावरण, जिसमें समस्त जीव जीवधारण करते हैं, खाते पीते और जीवन जीते हैं, वह पर्यावरण है।[1] पर्यावरण के जैविक घटकों में समस्त वनस्पति जगत एवं प्राणी जगत आता है व अजैविक घटकों में मृदा, पवन, जल, प्रकाश और ऊर्जा आते हैं। उपरोक्त समस्त जैविक और अजैविक घटकों के सामंजस्य और पारस्परिक अन्तर्सम्बंधों के आधार पर ही इस भूमंडल के पर्यावरण का निर्माण हुआ है। जब इस पर्यावरण के किसी भी घटक के साथ छेड़छाड़ या असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न होने पर पर्यावरण असंतुलन की समस्या जन्म ले लेती है तथा यही असंतुलन अन्य घटकों में भी श्रृंखलाबद्व परिवर्तन पैदा कर देता है।

पर्यावरण और जीवन के मध्य घनिश्ठ सम्बन्ध हैं और मनुश्य अपने जीवन की कल्पना पर्यावरण के बिना नहीं कर सकता। इसकी मूलभूत आवश्यकताएं पर्यावरण के द्वारा ही संरक्षित एवं संवर्धित है। स्वच्छ वातावरण में रहकर ही प्राणी मात्र आरोग्य प्राप्त करता हैं जिससे बल, वायु और सुख की प्राप्ति होती है। गत लाखों करोड़ों वर्शो से प्राणी, वनस्पति, जल और वायु में एक ऐसा सम्बन्ध स्थापित हैं जो पर्यावरण में संतुलन बनाये रखता है और एक दूसरे के पुरक पदार्थो का निर्माण करता है लेकिन मनुश्य लगातार अपने भौतिक सुखोपभोग में अतिशय वृद्वि करने के लिए वैज्ञानिक विकास एवं तकनीकी ज्ञान के बल पर प्राकृतिक संसाधनों के अधिकतम दोहन में लगा हुआ है। जो कि पर्यावरण के विनाश का कारण बन रहें हैं। जैसे कि प्रदूशण, वन विनाश, अम्लीय वर्शा, वैश्विक तापन, मरूस्थलीकरण, भूकंप,

भूस्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट आदि आपदाएं जो मनुश्य और पृथ्वी दोनों के लिए घातक है। भारतीय संस्कृति के विभिन्न धर्म ग्रन्थों जैसे महाभारत, रामायण, वेद, पुराण, उपनिशद, गीता आदि में पर्यावरण को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है। पर्यावरण की रक्षा के लिए भारतीय पुराणों में निरंतर वृक्षों, तालाबों, नदियों के जीवन को बचाने तथा पर्यावरण को शुद्ध रखने का संदेश दिया गया है। इस पत्र में पुराणिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण का विवेचन किया गया है।

पुराण एवं पर्यावरण संरक्षण

संस्कृत साहित्य में वैदिक काल से लेकर लगातार वर्तमान में उपलब्ध साहित्य में प्रकृति एवं पर्यावरण का विवरण किसी न किसी रूप में आवश्यक रूप से मिलता है। यहाँ पुराण साहित्य के संदर्भ में चर्चा करें तो पाते हैं कि आधुनिक काल एवं पौराणिक समय में पर्यावरण संबंधी प्रयत्नों में अनेक समरूपता देखने को मिलती है। पौराणिक समय में भी प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण से संबंधित वैचारिक धारणा बनाए रखने के लिए लगभग सभी साहित्यिक कृतियों में सृष्टि संबंधी तत्वों पर देवगुणों का आरोपण करके उन्हें शुद्ध बनाए रखने की अभीप्सा की गई। जैसे गंगा नदी को मोक्षदायिनी बताकर उसे निर्मल रखने की स्तुतियाँ की गई है। भूमि को माता, आकाश को पितातुल्य माना गया। पशु पक्षियों को देवी देवताओं के वाहन के रूप में दर्शाया गया।

पुराणों में प्रकृति संरक्षण की अवधारणा समस्त रूप से देखने को मिलती है। धर्म, अहिंसा, शान्ति, वन्य जीव जंतु एवं वनस्पति संरक्षण और यज्ञ की महत्वता का व्यापक वर्णन किया गया है। धर्म के संबंध में बताया गया है कि जो मानव ज्ञानेन्द्रियों के वशीभूत होकर सनातन धर्म का त्याग करता है उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता हैं।[2] अहिंसा के संबंध में बताया गया है कि मनुष्य को हमेशा अहिंसा का पालन करना चाहिए जिस प्रकार हिंसा से स्वयं को जो कष्ट होता है वैसा ही कष्ट अन्य जीव जंतु व वनस्पतियों को महसूस होता है।[3] शांति के संदर्भ में बताया गया है कि जो मनुष्य शांति को अपने हृदय में धारण करता है उसे परम अद्भुत सुख प्राप्त होता है।[4] शांति दो प्रकार की बतायी गई है – एक अंतर्मन की शांति, दूसरी प्रकृति के पंच तत्वों की शांति। इन पंच तत्वों की शांति यज्ञ से प्राप्त होती है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार

‘‘यज्ञ के बिना हमारी पृथ्वी, जल, वायु, सूर्य और अग्नि की तृप्ति का कोई अन्य उपाय नहीं है।’‘

यज्ञ का भाग देकर ही मानव इन्हें शांत कर सकता है। जो यज्ञ भाग को खुद खा जाते हैं उनके विनाशार्थ यह तत्व दूषित हो जाते हैं।[5]

मत्स्य पुराण में अंतरिक्षीय एवं धरती संबंधी महाविपल्व आने से अतिवृष्टि एवं अल्पवृष्टि के समय वैष्णवी शांति करने की अवधारणा मिलती है। इसके अलावा वातावरण को स्वच्छ करने के लिए नियत रूप से यज्ञ करने वाला मनुष्य स्वर्गगामी होता है।[6]

पुराणों में प्रकृति के मुख्य तत्वों का विभिन्न प्रकार से यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है:–

भूमि संबंधी व्याख्या

वर्तमान में भूमि प्रदूषण के अनेकों कारण मनुष्य ने पैदा कर दिए हैं। प्रथमतः अगर जनसंख्या वृद्धि होने से अधिक अनाज पैदा करने के लिए जमीन का अत्यधिक मात्रा में दोहन किया जा रहा है। कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अत्याधिक मात्रा में कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जो भूमि प्रदूषण के साथ साथ मनुष्य का स्वास्थ्य भी प्रदूषित कर रहे हैं। दूसरी तरफ शहरों के निकट मनुष्य की असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नित नवीन उद्योग लग रहे हैं जिनके अपशिष्टों से भूमि दूषित होती जा रही है। जो कि मानव के स्वास्थ्य पर दूरगामी दुष्परिणाम ला रही है।

पुराणों में प्रदूषित भूमि की शुद्धि के लिए अनेक तरीके बताए हैं जैसे कि प्रदूषित भूमि की उपरी सतह खोदकर दबा देने से, भूमि पर लकड़ी गोबर घासफूस डालकर भूमि की ऊपरी परत को मिला देने से, गोमय लीपने से, वर्षा द्वारा अपवित्र भूमि शुद्ध हो जाती है।[7] ब्रह्म पुराण के अनुसार भूमि की शुद्धि दाह मार्जन (बुहारी लगाने) एवं गायों के बैठने से होती है।[8] शिव पुराण के अनुसार सूरज अपनी विकिरण द्वारा अशुद्धियों को समाप्त कर देता है।[9]

जल संबंधी व्याख्या

पुराणों में जल को जीवन निर्वाह का प्रमुख स्रोत माना है। जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्राचीन काल में जनसंख्या कम होने के कारण जल की अशुद्धियां ज्यादा देखने को नहीं मिलती थी फिर भी शौच आदि के कारण जल दूषित हो जाता था। इसलिए जल में किसी भी प्रकार की विशुद्धियां पैदा न हो एवं जल संरक्षण की अवधारणा बनाए रखने के लिए पुराणों में जल के प्रदूषित होने

पर पीड़ाओं का डर और पाप का भागीदार बनने की संकल्पना की गई है।[10] वामन पुराण के अनुसार जो व्यक्ति जल में कफ, मल, मूत्र का परित्याग करते हैं उन्हें बहूत ही बदबूदार कुएँ से भरे हुई नरक में डाला जाता है।[11] ब्रह्म पुराण के अनुसार जल में मलमूत्र व संभोग करने की मनाही की गई है।[12]

पुराणों में जल संवर्धन एवं संरक्षण के विषय में बताया है कि जलाशयों का निर्माण एवं रख रखाव बहूत ही सुखदायी है। गरूड़ पुराण के अनुसार कूप, सरोवर, बावड़ी आदि बनाने वाले मनुष्य के इक्कीस कुलों की मुक्ति होती है और वह विष्णु लोक में पदस्थापित होता है।[13] ब्रह्माजी की मान्यता है कि जिस व्यक्ति द्वारा बनाए गए तालाब में जल भरा रहता है वो व्यक्ति अग्निहोत्र यज्ञ को उपलब्ध होता है। पुराणों में गंगा नदी के गुण धर्म का व्याख्यान करते हुए बताते हैं कि शुभ एवं मंगलकारी जल से ओत प्रोत गंगा नदी हिमालय पर्वत एवं धरती को पवित्र करती हुई अंततः मिलन के समय सागर को भी निर्मल कर देती है।[14]

वायु संबंधी व्याख्या

मनुष्य की बढ़ती असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नित नए विशालकाय रूप लेते उद्योगों से निकलने वाली जहरीली और दूषित गैसें लगातार वायुमंडल में शामिल होती जा रही है। यही वायु प्रदूषण प्राणियों के साथ साथ वन्य जीव जन्तुओं एवं वनस्पति के उत्थान में लगातार अवरोधक बन रहा है। पुराणों में वायु प्रदूषण के समाधान हेतु यज्ञ हवन को बहुत ही सस्ता सरल एवं सर्वश्रेष्ठ उपाय सुझाया है। यह न केवल वायु जबकि अंतरिक्ष व धरती को भी पावन बनाता है। लिंग पुराण के अनुसार सूरज के उदय के साथ ही यज्ञ करना चाहिए क्योंकि यही वह समय है जब सूरज की किरणों में अत्यंत तेज विद्यमान् होता है। पवित्र अग्निहोत्र यज्ञ के धुएं के मिश्रण से इन किरणों का तेज ओर भी बढ़ जाता है जो हानिकारक विषाणुओं जीवाणुओं को नष्ट करने में सहायक होता है।[15]

वनस्पति संबंधी व्याख्या

वनस्पति मानव समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता है फिर चाहे वो खाद्य आपूर्ति हो या फिर प्राणवायु की आपूर्ति हो। लगभग पूरा संसार अपने खाद्य पदार्थो की आपूर्ति ही नहीं वरन स्वास्थ्य लाभ देने वाली जड़ी बूटियों के लिए भी वनस्पति पर ही निर्भर है। इसके अलावा हमारे द्वारा प्रदूषित हुई वायु को अपने में समाहित करते हुए हमें शुद्ध एवं स्वच्छ वायु उपलब्ध करवाने का एकमात्र स्रोत वनस्पति जगत ही है।

हमारे मनश्वियों ने वृक्ष एवं वनस्पति संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता बताते हुए स्पष्ट किया है कि इनके संरक्षण से मिलने वाले पुण्य बहुत ज्यादा है व इनके संहार से मिलने वाला पाप रूपी दंड प्रायश्चित से भी दूर नहीं हो सकता। वृक्ष, उद्यान, उपवन लगाने वाला मनुष्य इस लोक में सुखपूर्वक निवास करता है।[16] गरूड़ पुराण के अनुसार माली उद्यान में पौधों की मूल जड़ों एवं तनों को बिना नुकसान पहुँचाए सिर्फ पुष्पों का संग्रहण करता है। शिवालय में लगे हुए वन और उपवन के वृक्षों एवं फूलों को नुकसान पहुँचाना उपपातक कहा गया है। फूलों से भरे हुए उपवन को नुकसान पहुँचाने वाले पापी मनुष्य को इक्कीस युग पर्यन्त कुत्ते का भोजन बनना पड़ता है।[17]

पुराणों में वन एवं उपवन निर्माण की विधियों का वर्णन बड़े ही विस्तारपूर्वक ढंग से किया गया है। पुराणों में अलग अलग प्रकार के वृक्षारोपण से नाना प्रकार के मंगलकारी आशीर्वादों की प्राप्ति का उल्लेख किया गया है। जैसे चम्पक को समृद्धि प्रदान करने वाला एवं बकुल के वंश वृद्धि करने वाला बताया गया है। पीपल को एक हजार बेटों के समकक्ष माना गया है।[18] वृक्षों का दान पिंडदान तुल्य बताया गया है। कल्कि पुराण में वर्णन मिलता है कि हवन करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति होती है जबकि सरोवर एवं वन, उपवन के निर्माता को इस जगह से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जीव जन्तु संबंधी व्याख्या

पौराणिक समय में पशु संरक्षण के संदर्भ में बताया गया है की गोहत्यारा निकृष्ट कृमिभक्ष नरक में डाला जाता है जहाँ वह कीट पतंगों को खाता है।[19] गायों के रास्ते में अग्नि जलाने वाला एवं जंगल में मासूम वन्य जीव जंतुओं की हत्या ब्रह्म हत्या के महागुनाह के समकक्ष ठहराया गया है।[20] मत्स्य पुराण में वर्णित है कि महर्षि अत्री की कुटिया में एक दूसरे के विपरीत आचरण वाले जीव जंतु भी एक साथ रहते थे। महर्षि अत्री ने वहाँ के जीव जंतुओं के स्वभाव में ऐसा बदलाव कर दिया था कि जिससे वे मांसाहारी जानवर भी फलाहार करने लगे।[21] देवीभागवत पुराण के अनुसार जो मनुष्य अपनी इन्द्रिय वशीभूत होकर लोभवंश वन्य जीव जंतुओं की हत्या करता है वह मज्जाकुंड में एक लाख साल तक मज्जा का भक्षण करता है तत्पश्चात खरगोश फिर सात बार मछली फिर तीन बार सुअर एवं सात बार मुर्गे का जन्म लेना पड़ता है।[22] जो मनुष्य इस लोक के सभी जीवों पर दया की दृष्टि रखता है वह स्वर्गलोक में वासी होता है।[23] पौराणिक समय में मनश्वियों ने कलयुग के विषय में जो संकल्पना कि वह सब आधुनिक काल में घटित होता दिख रहा है। जिसका दंश हम सब झेल रहे हैं। वर्तमान काल में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 11, November- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

लगातार जीव जन्तुओं एवं पशु पक्षियों की अनेक प्रजातियां विलुप्त प्राय हो चुकी है जिससे प्रकृति में एक असंतुलन पैदा हो गया है। क्योंकि प्राकृतिक संतुलन प्रकृति के पंचतत्वों सहित सभी जीव जन्तु, पशु पक्षियों और वनस्पतियों से बनता है जो की प्रत्येक दूसरे पर निर्भर है।

निष्कर्ष

धर्म पर आधारित पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित निर्देश पुराणों में दिए गए है और हमारा समाज पुरातन काल से ही उसे स्वीकारता रहा है। हम कह सकते हैं कि पुराणों में कर्मकांड के अंतर्गत जो पारलौकिक एवं प्रचुर अत्यधिक सुख को प्राप्ति के लिए यज्ञ अनुष्ठान कराए जाते हैं वह केवल परलोक प्राप्ति के लिए ही सीमित नहीं है वरन् वातावरण शुद्धि हेतु भी किए जाते थे। पुराणों में विभिन्न मंत्रों के माध्यम से मनुश्य को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक किया गया है। वर्तमान समाज में भी पर्यावरण संरक्षण के अनेकों उपाय किए जा रहे हैं लेकिन जरूरत है कि समाज में रहने वाले सभी जन अपने अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखे एवं इसके संरक्षण के लिए प्रण लें कि वे इसकी रक्षा करेंगे। वेदों, पुराणों में जो उपाय है उन उपायों पर अमल करके ही हम अपने पर्यावरण और स्वयं को बचा सकेंगे।

संदर्भ सूची

1 डॉ. दीपा गुप्ता, अध्याय 5, आध्यात्मिक परिपेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण, किताब भारतीय अध्यात्म और नैतिक पर्यावरण 2016 पृ.सं. 39

2 श्रीमद्भागवत् पुराण 10, 11

3 पद्म पुराण 1, 23

4 अग्नि पुराण 1, 55

5 मार्कण्डेय पुराण, पृ.सं. 223

6 मत्स्य पुराण, पृ.सं. 627

7 पद्म पुराण 1, 8

8 ब्रह्म पुराण 11, 24

9 शिव पुराण 11, 123

10 पद्‌म पुराण 30–34 पृ.सं. 85

11 नारद पुराण 1–322, वामन पुराण 1–23

12 ब्रह्म पुराण 2–24

13 गरूड़ पुराण 2–22ग

14 आदि पुराण 18–4

15 लिंग पुराण 35

16 अग्नि पुराण 1, 16

17 नारद पुराण 1, 125, 126

18 पद्‌म पुराण, सृश्टि खण्ड अध्याय 28

19 शिव पुराण 2–12

20 शिव पुराण 2–33

21 मत्स्य पुराण 118, 63–64

22 देवीभागवत पुराण 22, 23, 24

23 ब्रह्म पुराण 2, 6